चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| | 26-7-24 | 2 | 3-6 |

The Tribune

# Agri varsity will lead cane cultivation in state: VC

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, JULY 25

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University signed a memorandum of understanding (MoU) with M/s Saraswati Sugar Mills Limited, Yamunanagar, at the HAU, Hisar, today.

HAU Vice-Chancellor Prof BR Kamboj during the signing of the MoU said new varieties such as COH 188, COH 176 and COH 179 developed by Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University would lead sugarcane cultivation in the state in future. The HAU varieties, COH 56 and COH 119, had been very popular in their time. While COH 160 was popular not only in Haryana but also in neighbouring states. These varieties had brought a revolution in sugarcane cultivation, he said.

The MoU was signed by the Director, Human Resource Management, Dr Atul Dhingra, on behalf of the HAU, and senior vice-president DP Singh on behalf of the mill in presence of the Vice-Chancellor and Chief Executive Officer of Sugar Mills SK Sachdeva.

Kamboj said sugarcane was a very important cash crop of India and Haryana. It was grown in an area of 5.17 million hectares in India with a production of 439.4 million tonne and productivity of 849 quintals/hectare. In Haryana, sugarcane was grown in an area of 1.07 lakh hectares with a production of 88.82 lakh tonne and productivity of 819 quintals/hectare. He said the crop played a very important role in the economy of the farmers, state and country by providing raw material to the sugar industry. The crop and sugar industry had become even more important in the emerging scenario as sugarcane would be the main crop for ethanol production which was used for blending petrol.

He said the university was striving to develop technology partnerships with sugar mills for rapid development, multiplication and distribution of new sugarcane varieties to the farmers of Haryana. Mill testing was also an important parameter in introducing new sugarcane varieties for farmers, he said.

Sugar Mills chief executive officer SK Sachdeva said the farmers were cultivating sugarcane, sugar mills were processing the crop and the government was providing favourable policy support. There were 14 sugar mills in the state. The mills processed sugarcane to produce sugar, ethanol and electricity. M/s Saraswati Sugar Mills Limited was one of the largest sugar mills in the country, which had a high crushing capacity. The MoU would go a long way in promoting partnership between research institutes and the sugar industry.

The Regional Director of Regional Research Centre, Karnal, Dr Rajbir Garg, gave detailed information about the contribution of the HAU in growing of sugarcane crop. On the occasion, media adviser Dr Sandeep Arya, Dr Renu Munjal and IPR Cell in-charge Dr Yogesh Jindal were present.

## Signs pact with Yamunanagar-based sugar mills

Haryana Agricultural University VC and representatives of Saraswati mills sign an MoU. TRIBUNE PHOTO

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| | 26.7.24 | 5 | 1 |

THE TIMES OF INDIA

## Hisar varsity signs MoU with sugar mill

**Hisar:** Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University signed an MoU with M/s Saraswati Sugar Mills Limited, Yamunanagar. In the presence of vice-chancellor Prof B R Kamboj, the MoU was signed by director, human resource management Atul Dhingra on behalf of HAU and senior vice-president D P Singh on behalf of the mill. The V-C said the new varieties COH 188, COH 176 and COH 179 developed by the university will lead sugarcane cultivation in the state in future.

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 26.7.24 | 4 | 5-8 |

### एमओयू पर एचएयू की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक ने किए हस्ताक्षर

# गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने को एचएयू ने शुगर मिल के साथ किया समझौता

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की तरफ से विकसित नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। एचएयू की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है। ये विचार एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर

एचएयू की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की महत्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह फसल और चीनी उद्योग उभरते परिदृश्य में और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि गन्ना पेट्रोल में मिश्रण के लिए इथेनॉल उत्पादन के लिए मुख्य फसल होगी। उन्होंने कहा कि विवि का प्रयास है कि हरियाणा के किसानों को गन्ने की नई किस्मों के तेजी से विकास, गुणन और वितरण के लिए चीनी मिलों के साथ प्रौद्योगिकी साझेदारी विकसित की जाए। नई गन्ना किस्मों को जारी करने में मिल परीक्षण भी एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है।

शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ने बताया कि गन्ने की खेती करने वाले किसान, इस फसल को संसाधित करने वाली चीनी मिलें और सरकार अनुकूल नीतिगत सहायता प्रदान करती है। हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं। चीनी मिलें चीनी, इथेनॉल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं। मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड देश की सबसे बड़ी चीनी मिलों में से एक है, जिसकी पेराई क्षमता अधिक है। क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने गन्ना फसल में एचएयू के योगदान को लेकर जानकारी दी। मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. रेणु मुंजाल व आईपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल मौजूद रहे।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक जागरण | 26.7.24 | 4 | 2-5 |

# गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए किया समझौता

जागरण संवाददाता • हिसार: हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। ये विचार कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड यमुनानगर के साथ समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है,

समझौता के दौरान उपस्थित कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य • पीआरओ

जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है।

यह फसलें किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह फसल और चीनी उद्योग उभरते परिदृश्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि गन्ना पेट्रोल में मिश्रण के लिए इथेनाल उत्पादन के लिए मुख्य फसल होगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का प्रयास है कि हरियाणा के किसानों को गन्ने की नई किस्मों के तेजी से विकास, गुणन और वितरण के लिए चीनी मिलों के साथ प्रौद्योगिकी साझेदारी विकसित की जाए। नई गन्ना किस्मों को जारी करने में मिल परीक्षण भी एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है। शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ले बताया कि गन्ने की खेती करने वाले किसान, इस फसल को संसाधित करने वाली चीनी मिलें और सरकार अनुकूल नीतिगत सहायता प्रदान करती है। हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं। चीनी मिलें चीनी, इथेनाल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं। मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड देश की सबसे बड़ी चीनी मिलों में से एक है, जिसकी पेराई क्षमता अधिक है। यह समझौता ज्ञापन अनुसंधान संस्थानों और चीनी उद्योग के बीच साझेदारी को बढ़ावा देने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने गन्ना फसल में हकृवि के योगदान को लेकर विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य, डा. रेणु मुंजाल व आइपीआर सैल के प्रभारी डा. योगेश जिंदल मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक ट्रिब्यून | 26.7.24 | 4 | 7-8 |


# किसानों को मिलेगी गन्ने की नई किस्म, हकृवि ने की विकसित

हिसार, 25 जुलाई (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने गन्ने की नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 विकसित की हैं।

हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रांति ला दी है।

यह बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ समझौता ज्ञापन के दौरान कही। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है।

यह फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 26.7.24 | 4 | 2-4 |

# हकृवि ने गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल के साथ किया समझौता

*समझौता ज्ञापन के दौरान उपस्थित कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य अधिकारीगण।*

हिसार, 25 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नई किस्में सी.ओ.एच. 188, सी.ओ.एच. 176 और सी.ओ.एच. 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सी.ओ.एच. 56 और सी.ओ.एच. 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सी.ओ.एच. 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है।

ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। इस एम.ओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डी.पी. सिंह ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है।

यह फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एस.के. सचदेवा ने बताया कि हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं।

चीनी मिलें चीनी, इथेनॉल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं। यह समझौता ज्ञापन अनुसंधान संस्थानों और चीनी उद्योग के बीच साझेदारी को बढ़ावा देने में एक लंबा रास्ता तय करेगा। क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने गन्ना फसल में हकृवि के योगदान को लेकर विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. रेणु मुंजाल व आईपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल मौजुद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि. भूमि | 28.7.24 | | |

## हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में रही लोकप्रिय

# एचएयू ने शुगर मिल के साथ किया समझौता

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है यह बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान कही। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए। शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ने बताया कि गन्ने की खेती करने वाले किसान, इस फसल को संसाधित करने वाली चीनी मिलें और सरकार अनुकूल नीतिगत सहायता प्रदान करती है। हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं।

हिसार। समझौता ज्ञापन के दौरान उपस्थित कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य अधिकारीगण। फोटो: हरिभूमि

### गन्ना एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह फसल और चीनी उद्योग उभरते परिदृश्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि गन्ना पेट्रोल में मिश्रण के लिए इथेनॉल उत्पादन के लिए मुख्य फसल होगी।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सच कहूँ | 26.7.24 | 8 | 1-4 |

# हकृवि ने गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल के साथ किया समझौता

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। हरियाणा के चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार द्वारा विकसित की गई नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है।

ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह फसल और चीनी उद्योग उभरते परिदृश्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि गन्ना पेट्रोल में मिश्रण के लिए इथेनॉल उत्पादन के लिए मुख्य फसल होगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का प्रयास है कि हरियाणा के किसानों को गन्ने की नई किस्मों के तेजी से विकास, गुणन और वितरण के लिए चीनी मिलों के साथ प्रौद्योगिकी साझेदारी विकसित की जाए। नई गन्ना किस्मों को जारी करने में मिल परीक्षण भी एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है।

शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ने बताया कि गन्ने की खेती करने वाले किसान, इस फसल को संसाधित करने वाली चीनी मिलें और सरकार अनुकूल नीतिगत सहायता प्रदान करती है। हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं।

चीनी मिलें चीनी, इथेनॉल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं। मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड देश की सबसे बड़ी चीनी मिलों में से एक है, जिसकी पेराई क्षमता अधिक है। यह समझौता ज्ञापन अनुसंधान संस्थानों और चीनी उद्योग के बीच साझेदारी को बढ़ावा देने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अजीत समाचार | 26.7.24 | 5 | 1-5 |

# हकृवि ने गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल के साथ किया समझौता

हिसार, 25 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए। कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह फसल और चीनी उद्योग उभरते परिदृश्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि गन्ना पेट्रोल में मिश्रण के लिए इथेनॉल उत्पादन के लिए मुख्य फसल होगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का प्रयास है कि हरियाणा के किसानों को गन्ने की नई किस्मों के तेजी से विकास, गुणन और वितरण के लिए चीनी मिलों के साथ प्रौद्योगिकी साझेदारी विकसित की जाए। नई गन्ना किस्मों को जारी करने में मिल परीक्षण भी एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है। शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ले बताया कि गन्ने की खेती करने वाले किसान, इस फसल को संसाधित करने वाली चीनी मिलें और सरकार अनुकूल नीतिगत सहायता प्रदान करती है। हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं। चीनी मिलें चीनी, इथेनॉल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं। मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड देश की सबसे बड़ी चीनी मिलों में से एक है, जिसकी पेराई क्षमता अधिक है। यह समझौता ज्ञापन अनुसंधान संस्थानों और चीनी उद्योग के बीच साझेदारी को बढ़ावा देने में एक लंबा रास्ता तय करेगा। क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने गन्ना फसल में हकृवि के योगदान को लेकर विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. रेणु मुंजाल व आईपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल मौजूद रहे।

समझौता ज्ञापन के दौरान उपस्थित कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य अधिकारीगण।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
## लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सिटी पल्स न्यूज | 24.07.2024 | -- | -- |

# हकृवि ने गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल से किया एमओयू

**सिटी पल्स न्यूज, हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है। ये विचार कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए। शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ले बताया कि गन्ने की खेती करने वाले किसान, इस फसल को संसाधित करने वाली चीनी मिलें और सरकार अनुकूल नीतिगत सहायता प्रदान करती है। हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं। चीनी मिलें चीनी, इथेनॉल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं। मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड देश की सबसे बड़ी चीनी मिलों में से एक है, जिसकी पेराई क्षमता अधिक है। यह समझौता ज्ञापन अनुसंधान संस्थानों और चीनी उद्योग के बीच साझेदारी को बढ़ावा देने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

समझौता ज्ञापन के दौरान उपस्थित कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य अधिकारीगण

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
## लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पांच बजे न्यूज | 24.07.2024 | -- | -- |

# हकृवि ने गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल के साथ किया समझौता

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही है, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन

निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह फसल और चीनी उद्योग उभरते परिदृश्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि गन्ना पेट्रोल में मिश्रण के लिए इथेनॉल उत्पादन के लिए मुख्य फसल होगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का प्रयास है कि हरियाणा के किसानों को गन्ने की नई किस्मों के तेजी से विकास, गुणन और वितरण के लिए चीनी मिलों के साथ प्रौद्योगिकी साझेदारी विकसित की जाए। नई गन्ना किस्मों को जारी करने में मिल परीक्षण भी एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है।

शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ने बताया कि गन्ने की खेती करने वाले किसान, इस फसल को संसाधित करने वाली चीनी मिलें और सरकार अनुकूल नीतिगत सहायता प्रदान करती है। हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं। चीनी मिलें चीनी, इथेनॉल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं। मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड देश की सबसे बड़ी चीनी मिलों में से एक है, जिसकी पेराई क्षमता अधिक है। यह समझौता ज्ञापन अनुसंधान संस्थानों और चीनी उद्योग के बीच साझेदारी को बढ़ावा देने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने गन्ना फसल में हकृवि के योगदान को लेकर विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. रेणु मुंजाल व आईपीआर सैल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल मौजुद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 25-7-24 | 2 | 2-6 |


# नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी का बढ़ रहा है प्रकोप, किसानों की बढ़ी चिंता

## हकृवि के वैज्ञानिक भी गुलाबी सुंडी के नियंत्रण को लेकर कर रहे हैं किसानों को जागरूक

### हकृवि टीम द्वारा 40 गांवों में किया गया सर्वे

### किसान सभा ने आज बुलाई कपास उत्पादक किसानों की बैठक

हिसार, 24 जुलाई (राठी): कपास उत्पादक किसानों को एक बार फिर गुलाबी सुंडी और अत्यधिक गर्मी की दोहरी मार झेलनी पड़ रही है, जिससे हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, जींद और भिवानी जिलों में कपास की फसल को नुकसान हुआ है। इस नुक्सान को लेकर कृषि वैज्ञानिक भी गांवों का सर्वे कर रहे हैं। करीब 40 गांवों का सर्वे हो चुका है। वहीं कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ कार्य कर रहे हैं। हाल ही में हकृवि में गुलाबी सुंडी सहित अन्य रोगों की समस्या को लेकर हुई हकृवि में कार्यशाला भी हो चुकी है।

ज्ञात रहे कि हिसार, सिरसा, फतेहाबाद और आसपास के क्षेत्र को कपास बेल्ट के रूप में जाना जाता है, जहां हरियाणा की कपास क्षेत्र का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा है। कृषि वैज्ञानिकों ने कहा कि गुलाबी सुंडी के अलावा, तीव्र गर्मी की लहरों ने भी कपास के पौधों को जला दिया है। इस मानसून के दौरान हिसार में 40 प्रतिशत, सिरसा में 12 प्रतिशत, भिवानी में 39 प्रतिशत, जींद में 53 प्रतिशत सामान्य से कम बारिश हुई है। कम बारिश के कारण भी फसलें प्रभावित हो रही हैं। यही नहीं गुलाबी सुंडी से परेशान सिरसा जिले का एक किसान अपनी पूरी फसल को पिछले दिनों नष्ट कर चुका है। यह इस बार ही नहीं है बल्कि पिछले साल राजस्थान में कपास में गुलाबी सुंडी के हमले के कारण भी अधिक नुकसान हुआ था। वैसे पिछले दो वर्षों से गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी और प्रतिकूल मौसम के कारण कपास किसानों को फसल का नुकसान हो रहा है। इसी का नतीजा है कि हरियाणा में कपास का क्षेत्र घट रहा है।

कीट प्रबंधन संबंधी सलाह दी गई है कि नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिण्डे बनने की अवस्था में 20 टिण्डे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाड़कर गुलाबी सुण्डी हेतु निरीक्षण करें। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि अगले दो माह कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

### क्या कहना है कुलपति का

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.बी.आर.काम्बोज का कहना है कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए। कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सी.आई.सी.आर., सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट कार्य करना होगा।

### किसान सभा प्रतिनिधिमंडल ने कई गांवों का दौरा

किसान सभा के प्रतिनिधिमंडल ने जिले के कई गांवों का दौरा किया और किसानों से बातचीत पर पता चला की नरमा कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप शुरू हो चुका है। किसानों ने बताया कि हमारे यहां नरमा की फसल बड़े पैमाने पर बोई जाती रही है। लेकिन पिछले 3 साल में बीटी नरमा बुरी तरह से गुलाबी, चितकबरी व हरी सुंडी से प्रभावित हुई है। नरमा का बीटी बीज आने के बाद जो उत्पादन 20 से 30 मण प्रति एकड़ हो रहा था वह अब घटकर 5 से 10 मण रह गया है। और कई किसान तो ऐसे हैं जिनकी फसल पूरी तरह से नष्ट हुई है। किसानों ने बताया कि नरमा की फसल पर अन्य फसलों की अपेक्षा उत्पादन खर्च अधिक आता है जो कि 20 हजार से 30 हजार के बीच रहता है। उन्होंने बताया की 2021, 22 और 2023 में भी हमारे इलाके में अधिकतर किसानों की फसल प्रभावित हुई थी।

### नरमा में गुलाबी सुंडी को लेकर किसानों की बढ़ी परेशानी, आज बुलाई बैठक

अखिल भारतीय किसान सभा सदस्यों ने कहा कि नरमा-कपास की फसल का उत्पादन हरियाणा में बड़े स्तर पर किया जाता है। पिछले काफी दिनों से हरियाणा के साथ लगते राजस्थान के हनुमानगढ़ और गंगानगर जिलों में कपास की फसल पर गुलाबी सुन्डी के हमले की खबरें आ रही थीं। लेकिन अब हमारे हिसार और सिरसा के साथ-साथ फतेहाबाद के इलाके में भी नरमा की फसल में गुलाबी सुंडी की शिकायतें आने लगी हैं।

किसान सभा के प्रतिनिधिमंडल ने जिले के कई गांवों का दौरा किया और किसानों से बातचीत पर पता चला की नरमा कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप शुरू हो चुका है। किसान सभा की ओर से बहुत जल्द इस बारे में प्रशासन के उच्च अधिकारियों से मिला जाएगा और एक विस्तृत रिपोर्ट इस बारे में सरकार व प्रशासन को सौंपी जाएगी। किसान सभा के जिला उपप्रधान दिनेश सिवाच ने बताया कि 25 जुलाई को कपास उत्पादक किसानों की बैठक हिसार में होगी। जिसमें बीमारियों से खराब हुई कपास की फसल और आगामी आंदोलन पर चर्चा की जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| | 25.7.24 | 6 | 1-4 |

दैनिक भास्कर

ग्वार के बीज में गोंद की मात्रा अधिक होने से कपड़ा, खाद्य पदार्थ, खनन इंडस्ट्री में हो रहा प्रयोग

# फसल प्रबंधन और उन्नत किस्मों के बीज अपनाकर किसान ग्वार के उत्पादन से ले सकते हैं अच्छा मुनाफा

यशपाल सिंह | हिसार

ग्वार हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण खरीफ की फसल है। यह बीज के लिए मुख्यतः हिसार, भिवानी, चरखी दादरी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, गुरुग्राम, सिरसा, रोहतक, झज्जर व जींद के कुछ भागों में उगाया जाता है। बीज में 30-35 प्रतिशत तक गोंद होने के कारण ग्वार का हाल के वर्षों में औद्योगिक महत्व भी बहुत अधिक बढ़ गया है। ग्वार चूरी जो एक गौण उत्पाद है, बड़ी उपयोगी होती है क्योंकि इसमें 40% से भी अधिक प्रोटीन होती है जबकि ग्वार के बीज में यह 30% होती है। ग्वार का गोंद कपड़ा, खाद्य पदार्थ व श्रृंगार का सामान बनाने, खनन, विस्फोट और तेल उद्योगों में प्रयोग किया जाता है। किसानों के लिए ग्वार की खेती करना आसान है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज अनुसार उन्नत किस्म के बीज व फसल प्रबंधन को अपनाकर ग्वार का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

## ये हैं ग्वार की मुख्य किस्में

ग्वार की फसल। (फाइल फोटो)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के चारा विभाग के अध्यक्ष डॉ. जीएस दहिया व सहायक वैज्ञानिक डॉ. रवीश पंचटा के अनुसार ग्वार की निम्न किस्मों को अपनाकर किसान अधिक उत्पादन ले सकते हैं। इनमें एचजी 2-20, एचजी 563, एचजी 365, एचजी 870 व एचजी 884 जैसी उन्नत किस्मों को अपनाकर पैदावार बढ़ा सकते हैं।

## बिजाई का समयः पछेती किस्म की मध्य जुलाई में करें

बीज उत्पादन के लिए पछेती पकने वाली किस्मों की बिजाई मध्य जुलाई में करें। जुलाई के तीसरे सप्ताह के बाद बीज की पैदावार में काफी कमी आ जाती है। अगेती पकने वाली किस्मों एचजी 365 व एचजी 563 की अधिक पैदावार लेने के लिए बिजाई जून के दूसरे पखवाड़े में करते हैं। एचजी 870 व एचजी 2-20 की बिजाई जुलाई के प्रथम पखवाड़े में करनी चाहिए। इस समय बिजाई करने से सिंचित क्षेत्र में राया की फसल भी समय पर बीजी जा सकती है। एच.जी. 870 व एच. जी. 2-20 की बिजाई के प्रथम पखवाड़े में करनी चाहिए।

## फफूंदनाशकों से बचाएगा बीजोपचार

फसल को बोने से पहले बीज उपचार करना जरूरी है। अन्य दलहनी फसलों की भांति ग्वार के बीज को राइजोबियम व पीएसबी कल्चर से उपचारित करें। इससे फफूंदनाशकों पर आने वाले खर्च से बच सकते हैं। 6 लीटर पानी में 6 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन घोल लें और इस घोल में 6 किलोग्राम ग्वार का बीज 20-30 मिनट तक भिगोएं तथा बाद में 30-40 मिनट बीज को छाया में सुखाकर बिजाई करें।

## तेला आक्रमण से बचाना जरूरी

कभी-कभी फसल पर तेला आक्रमण करता है। इसकी रोकथाम के लिए किसान 200 मिली मैलाथियान 50 ईसी को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से हस्तचालित यंत्र से छिड़काव करें। यदि फसल चारे के लिए उगाई गई हो तो छिड़काव के 7 से 10 दिन तक पशुओं को यह फसल न खिलाएं।

## बीज की मात्रा, बिजाई विधि व उर्वरकों का रखें विशेष ध्यान

एक एकड़ के लिए 5-6 किलोग्राम बीज अगेती पकने वाली किस्मों एचजी 563, एचजी 870 व एचजी 2-20 और 7-8 किग्रा मध्यम अवधि वाली किस्म एचजी 75 के लिए पर्याप्त रहता है। पौधों में दूरी 15 सेंटीमीटर रखें। बिजाई के समय 16 किग्रा फास्फोरस (100 किग्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट) और 8 किग्रा नाइट्रोजन (17 किग्रा यूरिया) प्रति एकड़ के हिसाब से करें।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 26.7.24 | 3 | 1 |

## गन्ने की किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल से समझौता

**हिसार।** हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) की तरफ से विकसित की गई नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। एचएयू की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है।

यह बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान कही। इस एमओयू पर एचएयू की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए। कुलपति ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल है। प्रदेश में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ने बताया कि प्रदेश में 14 चीनी मिलें हैं। चीनी मिलें चीनी, इथेनॉल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं। क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने गन्ना फसल में एचएयू के योगदान को लेकर विस्तार से जानकारी दी। ब्यूरो

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| Punjab Kasri | 26.07.2024 | --- | -- |

पंजाब केसरी
www.Punjabkesari.com
6/12

# हकृवि ने गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल के साथ किया समझौता

हिसार, राज पराशर (पंजाब केसरी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए। कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849 क्विंटल/हेक्टेयर है। हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है।